Content

:: विषयानुक्रमणिका ::

प्राक्कथन — पृ. 1 से 9

प्रथम अध्याय : सियारामशरण गुप्त : जीवन और व्यक्तित्व — पृ. 1 से 29

प्रस्तावना :
जन्म - वंशपरिचय- बाल्यकाल - शिक्षा और अध्ययन - पारिवारिक जीवन - साहित्य सृजन की प्रेरणा - उपलब्धि और प्रसिद्धि - व्यक्तित्व- वेशभूषा - स्वभाव - खानपान एवं अभिरुचि - उपसंहार।

द्वितीय अध्याय: सियारामशरण गुप्त की काव्यकृतियों का संक्षिप्त परिचय — पृ. 30 से 51

प्रस्तावना :

[अ] मौलिक कृतियाँ :
मौर्य-विजय - अनाथ - दूर्वा-दल - विषाद- आर्द्रा - आत्मोत्सर्ग - पाथेय - मृण्मयी - बापू - उन्मुक्त - दैनिकी - नोआखली में- नकुल - जयद्रिन्द्र - 'कवि श्री' सियारामशरण गुप्त - अमृतपुत्र - गोपिका - सुनंदा।

[आ] अनूदित कृतियाँ :
गीता संवाद - हमारी प्रार्थना - बुद्धवचन - उपसंहार।

तृतीय अध्याय : गांधीदर्शन : सैध्दांतिक विवेचन — पृ. 52 से 126

प्रस्तावना :
गांधीविचारधारा का प्रादुर्भाव और विकास - गांधीयुग की पूर्वपीठिका - १८५७ की क्रांति-

सांस्कृतिक आंदोलन – भारतीय राजनीतिमें गांधीजी का प्रवेश – गांधीजी के आगमन के पहले की राजनीतिक परिस्थितियाँ – रोलेट एक्ट एवं अहिंसात्मक आंदोलन – असहयोग आंदोलन – पूर्ण स्वराज्य की ओर – स्वराज्य प्राप्ति : देश का विभाजन।

गांधी विचारधारा के प्रमुख पक्ष :

१] आध्यात्मिक पक्ष :

अध्यात्म से गांधीजी का आशय –सत्य शब्द की व्याख्या – सत्य शब्द का अस्तित्ववादी अर्थ – सत्य का ज्ञानात्मक अर्थ – सत्य का मूल्यात्मक अर्थ – भारतीय परिस्थितिके अनुरूप ईश्वर शब्द का गांधीजी व्दारा अर्थ-विस्तार – सत्य का स्वरूप – सत्य का क्षेत्र – सत्य का निकष – सत्य का परिवेश – ईश्वर संबंधी गांधीजी के विचार – ईश्वर साक्षात्कार कैसे हो ? सत्य का साधन – अहिंसा – अहिंसा क्या है ? – अहिंसा का भावात्मक अर्थ – अहिंसा का मनोविज्ञान – अहिंसक वीरता – हिंसा अहिंसा का निर्णय कैसे किया जाय ? – अहिंसा का समाजशास्त्र – अहिंसक राज्य और समाज में दण्डनीति का स्वरूप – जनतंत्र एवं अहिंसा – गांधीजी का अहिंसक समाज – अहिंसा और हिंसा संबंधी भेद – अहिंसा प्राप्ति के लिये आत्मशुध्दि की आवश्यकता – अहिंसा पालन के लिये विनय और नम्रता की आवश्यकता।

२] धार्मिक पक्ष :

धर्म और अध्यात्म में अंतर – धर्म के तत्व – पवित्र विश्वास – मानवीय संवेग। आचरण और क्रियाएँ – गांधीजीद्वारा निर्धारित आराधना प्रणाली – धर्म और नैतिकता – गांधी धर्म और व्यक्ति – धर्म और राजनीति की अभिन्नता – धर्म और अर्थ – धार्मिक सहअस्तित्व का सिध्दांत – प्रार्थना – वैराग्य– गांधी धर्म अवधारणा में उपवास का स्थान व महत्व – ब्रहमचर्य – ब्रहमचर्य का लक्ष्य – ब्रहमचर्य की व्यवहारिकता – अस्वाद – अस्तेय सिध्दांत – अपरिग्रह सिध्दांत – अपरिग्रह का लक्ष्य – ट्रस्टीशिप का सिध्दांत – शरीरश्रम तथा स्वावलंबन – स्वदेशी की गरिमा।

३] सामाजिक पक्ष :

वर्णाश्रम धर्म – आश्रम व्यवस्था – अस्पृश्यता निवारण तथा हरिजनोध्दार – सांप्रदायिक एकता – नारी उध्दार तथा नारी का कार्यक्षेत्र – वेश्या उध्दार – परदा प्रथा का विरोध – विधवा विवाह समर्थन – अंतरजातीय विवाह का समर्थन – दहेज प्रथा का विरोध – शराब बंदी और मादक वस्तुओं का निषेध।

४] आर्थिक पक्ष :

सर्वोदय की भावना – उद्योगवाद एक अभिशाप – खादी का महत्व – ग्रामीण उद्योगधंधों का प्रचार – गो-रक्षा।

५] राजनीतिक-राष्ट्रीय पक्ष :

सत्याग्रह - सत्याग्रह की व्याख्या - सत्याग्रह का उद्देश्य - सत्याग्रह का औचित्य - अहिंसक आंदोलन के लाभ - असहयोग आंदोलन - सविनय अवज्ञा - स्वतंत्रतासंग्राम - रामराज्य अथवा स्वराज्य- राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयता।

६] कला, साहित्य और संस्कृति पक्ष :

कला संबंधी विचार - साहित्य संबंधी विचार - संस्कृति - शिक्षा और माध्यम - राष्ट्रभाषा - उपसंहार।

चतुर्थ अध्याय : आध्यात्मिक पक्ष पृ. 127 से 196

प्रस्तावना :
अध्यात्म से गांधीजी का अभिप्राय - सियारामशरणजी के काव्य में अभिव्यक्त अध्यात्म का स्वरूप - सत्य-अहिंसा - आत्मशुद्धि - उपसंहार।

पंचम अध्याय : धार्मिक पक्ष पृ. 197 से 270

प्रस्तावना :
धर्म से गांधीजी का अभिप्राय - सियारामशरणजी के काव्य में व्यक्त धर्म का स्वरूप - नीति की व्यंजना - वैष्णवता और भक्तिभावना का स्वरूप - रामनाम की महिमा का गुणगान - प्रार्थना की उपादेयता - कर्म के प्रति आग्रह - सेवा और परोपकार - तप एवं वैराग्य का महत्व - व्रत और उपवास का आग्रह - कविता में नैतिक

शक्तियों की अभिव्यक्ति - पाँच व्रतों की महत्ता - ब्रह्मचर्य का महत्व - अस्तेय का महत्व - अपरिग्रह के प्रति आग्रह - अस्वाद सिध्दांत का समर्थन - अभय का निरूपण - स्वदेशी की गरिमा - शरीरश्रम तथा स्वावलंबन- उपसंहार।

षष्ठ अध्याय : सामाजिक पक्ष पृ. 271 से 343

प्रस्तावना :
गांधीजी का सामाजिक दृष्टिकोण - सियारामशरणजी के काव्य में अभिव्यक्त गांधीजीके सामाजिक सिध्दांत - वर्णाश्रम धर्म की स्थापना और ऊँचनीच की भावना का विरोध - अस्पृश्यता निवारण की भावना - सांप्रदायिक एकता का आग्रह - नारी जीवन के विविध पक्षों - विधवा समस्या तथा वेश्या समस्या की अभिव्यक्ति - दहेज प्रथा का विरोध - मधपान निषेध का आग्रह - सामाजिक अन्याय, अत्याचार एवं शोषण का विरोध - मानवतावादी चेतना का निरूपण - उपसंहार।

सप्तम अध्याय : राजनीतिक - राष्ट्रीय पक्ष पृ. 345 से 392

प्रस्तावना :
गांधीजी का राजनीतिक-राष्ट्रीय दृष्टिकोण - सियारामशरणजी के काव्य में व्यक्त राजनीतिक-राष्ट्रीय स्वरूप - नीतिपूर्ण राजनीति का आग्रह - देशप्रेम एवं राष्ट्रीय भावना का निरूपण - सत्याग्रह का महत्व एवं सत्याग्रही के निर्भय रूप का अंकन - असहयोग आंदोलन का महत्व -

जनसत्तात्मक राजनीतिका समर्थन - सर्वोदय
की भावना - उपसंहार।

अष्टम अध्याय : आर्थिक तथा कला, साहित्य-संस्कृति पक्ष पृ.393 से 432

अ] आर्थिक पक्ष :

प्रस्तावना :
आर्थिक विषमता का चित्रण - सर्वहारा वर्ग
के प्रति संवेदना - ट्रस्टीशिप का सिध्दांत -
चरखा एवं खादी के महत्त्व का प्रतिपादन -
यांत्रिकता का विरोध - उपसंहार।

आ] कला, साहित्य, संस्कृति पक्ष :

प्रस्तावना :
कला संबंधी दृष्टिकोण - काव्य संबंधी विचार -
काव्य प्रयोजन - भारतीय संस्कृति के आख्याता-
शिक्षा संबंधी विचार - मातृभाषा के महत्त्व का
निरूपण - उपसंहार।

नवम अध्याय : उपसंहार पृ. 433 से 447

सहायक ग्रंथ सूची पृ. 1 से 6